ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन और प्रसाद के नाटक

डॉ. आर. एम. खराडे

प्राध्यापक,

बी. एस. एस. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

माकणी, ता. लोहारा जा. धाराशिव. 413604

भारत की गौरवशाली इतिहास परंपरा में मध्यकाल को अंध:कार युग कहा गया है। इस कालखंड में भारत को विदेशी दासता से गुजरना पड़ा है। इस कालखंड में भी भारतवासियों ने विदेशी दासता का प्रतिरोध और पुराने वैभव को प्राप्त करने के लिए यथासंभव संघर्ष किया है। विशेषकर अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिए भारत में सुनियोजित ढंग से आंदोलन चलाए गये। हिंदी के साहित्यिकों ने स्वाधीनता के महत्व को समझते हुए राष्ट्रीय भावनाओं को मुखरित कर जनसाधारण को उद्वेलित किया है। निर्मल वर्मा एक स्थान पर लिखते हैं कि कोई भी जाति संकट की घड़ी में अपने अतीत, अपनी जड़ों को टटोलती है। संकट की घड़ी आत्ममंथन की घड़ी है और सही आत्ममंथन हमेशा अतीत में लिये गये फैसलों के आसपास होता है...। जिस तरह एक व्यक्ति अपनी स्मृति में दुनिया को परखता है, उसी तरह एक जाति अपनी परम्परा की आंखों से यथार्थ को छानती है।

हिंदी के महान कवि, कहानीकार और श्रेष्ठ नाटककार जयशंकर प्रसाद ने अपने साहित्यिक रचनाओं द्वारा भारत के अतीत गौरव का चित्रण कर वर्तमान स्थिति से मुक्ति का मार्ग बतलाया है। प्रसाद जी ने विदेशी राजनीतिक प्रभुत्व से आतंकित भारतीय हृदय को शक्ति और सुरक्षा का अवलम्ब देकर आश्वस्त किया तथा आत्मबल का विश्वास दिलाया। पश्चिमी सभ्यता के प्रकाश से चौंधियाई पथभ्रष्ट आंखों को शीतल पथ-प्रदर्शक आलोक दिया तथा दीन भाव से जर्जर जीवन को सशक्त गति दी।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रसाद जी ने देशवासियों में आत्मगौरव और राष्ट्रीय भावना जगाने के लिए भारत के स्वर्णिम अतीत को नाटकों का विषय बनाया। उनका मानना है कि, "इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति को अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यंत लाभदायक है, क्योंकि हमारी गिरी हुई दशा को उठाने के लिए हमारी जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं, इसमें हमें पूर्ण संदेह है।"1 हिंदी नाटक साहित्य में प्रसाद जी के अभ्युदय से यह काल चरमोत्कर्ष का काल माना जाता है । प्रसाद जी ने लगभग एक दर्जन नाटक लिखकर हिंदी नाटक साहित्य को समृद्ध किया। उनके नाटक राष्ट्रीय जागरण के अन्यतम उदाहरण है- 'सज्जन','कल्याणी परिणय', 'करुणालय', 'प्रायश्चित', 'राज्यश्री', 'विशाख', 'अजातशत्रु', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'स्कंदगुप्त', 'एक घूँट', 'कामना', 'चन्द्रगुप्त', तथा 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे नाटक लिखकर हिंदी साहित्य का गौरव बढाया। इनके नाटकों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक चेतना, इतिहास और कल्पना का सुंदर सामंजस्य, दार्शनिक गंभीरता और साथ ही काव्यात्मक सरसता, वीरता और साहस व प्रेम का रोमानी संघर्षपूर्ण वातावरण, देशकाल का सजीव चित्रण आदि विशेषतायें इनके नाटकों में दृष्टव्य होती है। डॉ सत्येंद्र ने ठीक ही लिखा है कि, " इतिहास को प्राणवान करके प्रसाद जी ने आधुनिक युग के लिए विचार सामग्री दी, उसको दिशा दर्शन कराया। समस्या नाटक उन्होंने नहीं लिखे पर समस्याओं से वे पीछे नहीं हटे। ऐसी कौन सी सामयिक समस्या थी जो उनके नाटकों में शाश्वत मानवीय समस्या के धरातल पर प्रस्तुत न हुई हो।"2 प्रसाद जी के प्रत्येक नाटक में आर्य-राष्ट्र को संगठित, सुरक्षित, सशक्त और महान बनाने का सफल प्रयत्न है। 'जनमेजय का नागयज्ञ' से लेकर अंतिम नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' तक सभी में राष्ट्रीय भावनाएं ओतप्रोत है। 'स्कंदगुप्त' और 'चंद्रगुप्त' मैं यह राष्ट्रीयता चरमावस्था पर पहुंच अनंत बलिदानों को गोद में लिए वैभव के शिखर पर आसीन है। 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', और 'स्कंदगुप्त' में भारत पर विदेशी आक्रमण हुए हैं- ऐसे ही समय राष्ट्रीयता चमक उठती है। इन आक्रमणों के समय ही प्रसाद जी ने ऐसे पात्र उपस्थित किए हैं जो राष्ट्रीय जागरण के गीत गाते हैं और राष्ट्रीय सम्मान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तत्पर रहते हैं। प्रसाद की राष्ट्रीयता में गौरवशाली विजय का उल्लास है, उसमें भारतीय शक्ति, शौर्य, सेवा, क्षमा, त्याग, बलिदान- सभी की रंगीन किरणें हमारे अतीत के चित्रों को चमकाती हैं। विदेशी विजेताओं के दंभ का चुनौतीपूर्ण उत्तर है। उन्हें यह कदापि सहन नहीं की विदेशी शासक भारतीय प्रभुसत्ता को हस्तगत करने का प्रयास करें। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के सम्मान की रक्षा का संदेश ही उनके नाटकों का मूल स्वर है। बन्धुवर्मा कहता है- "तुम्हारे शस्त्र ने बर्बर हूणों को बता दिया है कि रण-विद्या केवल नृशंसता नहीं है, जिनके हाथों से आज विश्व-विख्यात रोम साम्राज्य पादाक्रांत है, उन्हें तुम्हारा लोहा मानना होगा और तुम्हारे पैरों के नीचे दबे कंठ से उन्हें स्वीकार करना होगा कि भारतीय दुर्जेय वीर है।"3 इसी शक्ति और शौर्य के द्वारा हर एक भारतीय के प्राणों में सफल विश्वास जागता है और विदेशी आक्रमणकारी का कलेजा कांपता है।

'चंद्रगुप्त' की घटनाओं को प्रसाद ने अपनी दिव्य प्रतिभा की शाण पर चढ़ाकर नयी आभा प्रदान की है। नंद द्वारा चाणक्य का अपमान व्यक्तिगत घटना नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय घटना है। समस्त आर्यावर्त को एक राष्ट्र के रूप में देखने वाला चाणक्य चाहता है की सिकंदर के विरुद्ध नंद पर्वतेश्वर की सहायता करें। वह कहता है-" यवन आक्रमणकारी बौद्ध और ब्राह्मण का भेद न रखेंगे।"4 चाणक्य के माध्यम से बताया गया है कि प्रादेशिक प्रेम, सांप्रदायिक संकीर्ण मनोवृत्ति

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

त्यागने में ही राष्ट्र हित है। इसलिए सभी विश्रृंखलित शक्तियों को चाहिए कि वे एक होकर विदेशी आक्रांताओं का सामना करें। एक अन्य स्थान पर वह सिंहरण से कहता है, "तुम मालव हो और यह मगध, यही तुम्हारे मान का अवसान है न? परन्तु आत्म-सम्मान इतने ही से सन्तुष्ट नहीं होगा। मालव और मगध को भूलकर जब तुम आर्यावर्त का नाम लोगे, तभी वह मिलेगा.... अन्यथा आर्य वृत्त के सब स्वतंत्र राष्ट्र एक के अंनंतर दूसरे विदेशी विजेता से पद दलित होंगे।"5 यही एकता की भावना चाणक्य ने जगा दी इसी कारण सिंहरण के लिए समस्त आर्यावर्त अपना देश हो गया। तक्षशिला के पतन पर उसका हृदय विदीर्ण होने लगा। वह कहता है- "मेरा देश मालव ही नहीं गांधार भी है- समस्त आर्यावर्त है।"

स्कंद गुप्त नाटक में राष्ट्र पर आए संकट के समय निजी एवं क्षुद्र स्वार्थ का त्याग कर राष्ट्रभक्त नागरिक एवं सैनिक से राष्ट्रहित में निर्णय लेने का संदेश देते हुए पृथ्वीसेन कहता है, " महाप्रतिहार! पश्चिम और उत्तर में से काली घटाएं उमड़ रही है। यह समय अंतर्विद्रोह का नहीं है। ...हम लोग गुप्त साम्राज्य के विधान अनुसार चरम प्रतिकार करें। बलिदान देना होगा।"6 'स्कंदगुप्त' नाटक में प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना और भी उज्जवल, तीव्र और प्राणवान और त्यागमयी होकर आयी है। स्कंदगुप्त के समय टिड्डीदल के समान हूणों की बाढ़ भारतीय राष्ट्र की सुख समृद्धि और शांति को बहा ले जाने के लिए आ रही थी। अतः इस नाटक में अधिक से अधिक त्याग, कष्ट–सहिष्णुता , देशसेवा और निस्वार्थ बलिदान के चमकते चित्र हैं। नाटक के पात्र – बंधुवर्मा, पर्णदत्त, देवसेना, जयमाला और स्कंद गुप्त- ये सभी स्वतंत्रता के पुजारी है। स्कंदगुप्त पूर्ण रुप से साम्राज्य को सुरक्षित रखना चाहता है, यद्यपि साम्राज्य उसकी निजी संपत्ति नहीं है। एक ही नहीं, सौ स्कंदगुप्त साम्राज्य रक्षा पर न्योछावर है और यही भावना उसे अपने साम्राज्य का सामान्य सैनिक कहने को प्रेरित करती है। वह स्पष्ट कहता है- "मेरा स्वत्व न हो, मुझे अधिकार की आवश्यकता नहीं। यह नीति और सदाचारों का महान वृक्ष- गुप्त साम्राज्य हरा-भरा रहे और कोई भी इसका उपयुक्त रक्षक हो।" वह देश की रक्षा के लिए हंसते-हंसते देशप्रेम की बलिवेदी पर चढ़ने के लिए तत्पर है। गुप्त-साम्राज्य की सुख शांति और समृद्धि के तनिक भी अनिष्ट की आशंका से इन पात्रों का हृदय कांप उठता है। प्रसाद जी के पात्रों का उदात्त चरित्र स्वयंमेव राष्ट्रीय स्वाभिमान की वस्तु बन जाता है। 'चंद्रगुप्त' नाटक के चाणक्य, चंद्रगुप्त, सिंहरण, अलका आदि पात्र इसी कोटी के हैं, जो कि अनायास ही जन जीवन की श्रद्धा के अधिकारी बन जाते हैं और स्वयं के साथ ही राष्ट्र को भी ऊंचा उठा देते हैं। यह सभी पात्र ऐसे देशभक्त है जो कि राष्ट्र के लिए अपने तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थ को तिलांजलि देकर अपने प्राणों को हथेली पर लिए सदैव ही देश सेवा के लिए प्रस्तुत रहते हैं। चाणक्य अपने कर्तव्य पथ पर सुख और दुख दोनों ही स्थितियों में समान रूप से अडिग रहते हैं। वे एक महान कर्मयोगी है। चंद्रगुप्त अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए 'मरण से भी अधिक भयानक का आलिंगन' करने के लिए सदा तैयार रहता है। सिंहरण और अलका तो भारतीय संस्कृति के प्रतीक उदात्त पात्रों के रूप में सामने आते ही हैं, वे भारतीय संस्कृति की उदारता, सहिष्णुता, निर्भीकता, स्वार्थ त्याग आदि श्रेष्ठतम गुणों से विभूषित है। अलका सन्मार्गगामिनी है, अतः अपने भाई के रुष्ट होने का भी भय नहीं करती। उसकी निर्भीकता का परिचय तब मिलता है जब पथ में उसकी भेंट सिल्यूकस से

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

हो जाती है और सिल्यूकस के यह कहने पर- 'तुम कहां, सुंदरी राजकुमारी'- वह निर्भीकतापूर्वक पूर्वक उत्तर देती हैं – " मेरा देश है, मेरे पहाड़ है, मेरी नदियां है और मेरे जंगल है। इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे हैं और मेरे शरीर के एक-एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं से बने हैं, फिर मैं और कहां जाऊंगी यवन?"7 अलका राज्य क्रांति की ज्वलंत चिनगारी है। उसके मुख से निकले इस गीत में राष्ट्र की वाणी गूंज उठी – " हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती। स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती। अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस् तो पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।" नाटककार का सामाजिक हृदय उसके इस गीत द्वारा मुखरित हो उठा है। भारतीयता की पुकार एवं नवयुग की चेतना इस जीत का प्राण है। 'वंदे मातरम' गीत जैसी राष्ट्रीय भावना से समन्वित प्रस्तुत गीत पात्र एवं परिस्थिति विशेष के भी सर्वथा अनुकूल है।

स्कंदगुप्त नाटक का पात्र मातृगुप्त भारत महिमा का गान करते हुए कहता है- "किसी का हमने छिना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यही। हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आए थे नहीं। जिए तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यही हर्ष। निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।"8 धातुसेन एक स्थान पर भारत की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करते हुए कहता है- "वसुंधरा का हृदय- 'भारत' किस मूर्ख को प्यार नहीं है? तुम देखते नहीं कि विश्व का सबसे ऊंचा श्रृंग इसके सिरहाने और सबसे गंभीर तथा विशाल समुद्र इसके चरणों के नीचे हैं! एक से एक सुंदर दृश्य प्रकृति ने अपने सुंदर घर में चित्रित कर रखा है। भारत के कल्याण के लिए मेरा सर्वस्व अर्पित है।"9 'चंद्रगुप्त' नाटक की नायिका कार्नेलिया, जिसका बाह्य आवरण तो यूनानी है किन्तु उसका आंतरिक हृदय भारतीय है। भारत-भूमि के प्रति उसे जन्मभूमि जैसा अनुराग एवं आकर्षण है। वह भारत के प्राकृतिक वैभव के साथ ही यहां के सरल जीवन और उच्च दार्शनिक चिंतन पर मुग्ध है। यहां के भोले कृषक और सरल कृषक बालिकाएं उसकी सरल प्रकृति के अनुरूप है। वह चंद्रगुप्त से स्पष्ट शब्दों में कहती है-"मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है।...यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि- भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है? कदापि नहीं। अन्य देश मनुष्य की जन्मभूमि है, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि स्वाधीनता आंदोलन के समय राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से प्रसाद के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखित नाटक अत्यंत सफल रहे हैं। विभिन्न प्रमुख पात्रों के माध्यम से प्रसाद जी ने राष्ट्र- प्रेम के अनेक महत्वपूर्ण उद्गार कहलवाये हैं। वस्तुत: उनके सभी नाटक पराधीनता की अंधकारमयी दिशा में प्रकाश-पिंड के समान ज्योतिर्मान हैं। इन नाटकों के सभी पात्रों के प्राणों में बलिदान का उल्लास, राष्ट्र निर्माण का संकल्प और उनके प्रयत्नों में सफलता का गौरव है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. जयशंकर प्रसाद, विशाख, भूमिका से
2. डॉ. सत्येंद्र, हिंदी नाटक साहित्य, पृ.110
3. जयशंकर प्रसाद, स्कंदगुप्त
4. जयशंकर प्रसाद, चंद्रगुप्त, पृ.50
5. वही, पृ. 50-51
6. जयशंकर प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 105

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

7. जयशंकर प्रसाद, चंद्रगुप्त, पृ. 78
8. जयशंकर प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 143-144
9. वहीं, पृ. 119

Cite This Article:

डॉ. खराडे आर. एम. (2024). *स्वाधीनता आंदोलन और प्रसाद के नाटक*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 31–35) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646558